प्रसार भारती आकाशवाणी, पटना केन्द्र के तत्त्वावधान में आयोजित संगीत–प्रतियोगिता में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–03.03.2017, समय–अपराह्न– 06:30 बजे, स्थान–भारतीय नृत्य कला मंदिर, पटना)

प्रसार भारती आकाशवाणी पटना केन्द्र के तत्त्वावधान में आयोजित संगीत– प्रतियोगिता में प्रमुख रूप से उपस्थित आकाशवाणी के अपर महानिदेशक ग्रुप–कैप्टन श्री पी॰एन॰ नायडू, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के संगीतज्ञ और बिहार के सपूत पद्मश्री डॉ॰ गजेन्द्र नारायण सिंह जी, प्रसिद्ध कथाकार पद्म श्री उषाकिरण खान जी, आकाशवाणी पटना के निदेशक श्री पी॰के॰ ठाकुर, दूरदर्शन केन्द्र पटना के निदेशक श्री पी॰एन॰ सिंह, आकाशवाणी के सहायक निदेशक श्री के॰के॰ सिन्हा, संयुक्त निदेशक श्री आर॰ उपाध्याय, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के सभी वरीय अधिकारीगण, विभिन्न राज्यों एवं बिहार के विभिन्न जिलों से आये गीत–संगीत के प्रतिभावान कलाकारगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण तथा बिहार के संगीत–प्रेमी देवियों एवं सज्जनों !!

भर्तृहरि ने कहा है कि साहित्य, गीत–संगीत और कला विहीन मनुष्य पूँछरहित पशु के समान है। निश्चय ही एक आदर्श मनुष्य की पहचान कला और संस्कृति के प्रति उसके अनुराग से ही परिपूर्ण होती है। आज की दुनियाँ की भाग–दौड़ में भी संगीत हमारे दिल को शुकून देता है। हमें सुसंस्कृत बनाता है, हमारे भीतर प्रेम, भक्ति, शांति और सौन्दर्य–चेतना विकसित करता है। एक जगह एक साथ बैठकर जब हम संगीत का आनंद लेते हैं, तो इससे सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को भी मजबूती मिलती है। आज के कार्यक्रम को भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए।

आकाशवाणी पटना का उद्घाटन भारतीय राजनीति में 'लौहपुरूष' के रूप में विख्यात भारत के प्रथम गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा 26 जनवरी, 1948 को हुआ था। तब से लेकर आजतक आकाशवाणी पटना की प्रगति–यात्रा पर जब हम नजर दौड़ाते हैं तो पाते हैं कि संस्थान ने निरन्तर कला–संस्कृति, साहित्य और विचारों की दुनियाँ में अपनी सार्थक पहचान बनाये रखी है। आज सूचना–क्रांति और तकनीकी विकास के दौर में भी सूदूरवर्त्ती देहाती क्षेत्रों में गीत–संगीत और समाचार आदि सुनने के लिए अभिवंचित और गरीब लोगों के पास रेडियो ही एकमात्र विकल्प बचा हुआ है। रेडियो–प्रसारणों के आज तौर–तरीके बदल गए हैं। छोटे–छोटे कम्यूनिटी रेडियो केन्द्र स्थापित हुए हैं और एफ॰एम॰ रेडियो, रेडियो मिर्ची जैसे संस्थानों की लोकप्रियता बढी है। किन्तु, अगर हम गंभीरता से सोचें तो पाएँगे कि अब भी हमारे आकाशवाणी और दूरदर्शन के पास गीत–संगीत एवं कला–संस्कृति की जो अकूत सम्पदा और विरासत मौजूद है, वह दूसरे संस्थानों में बहुत कम उपलब्ध है। मैं समझता हूँ कि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को आकाशवाणी एवं दूरदर्शन की प्रमुख एवं लोकप्रिय प्राचीन विरासतों को इनकी लाइब्रेरी से निकालकर, उनका इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल संग्रहण करना चाहिए और इसे सर्वसुलभ बनाया जाना चाहिए। मुझे विश्वास है, मंत्रालय इस दिशा में निश्चित रूप से हरसंभव प्रयास कर रहा होगा। ऐसे संग्रहों के डी॰वी॰डी॰ कैसेट्स तैयार कर उन्हें बिक्री के लिए उपलब्ध कराना बेहतर होगा। इसके फलस्वरूप, आज की युवा पीढ़ी अपनी प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक विरासतों और परम्पराओं से अवगत होगी, साथ ही उसे नये सृजन की प्रेरणा भी मिलेगी। नई प्रतिभाओं की खोज करना भी आकाशवाणी का एक प्रमुख उद्देश्य रहा है। आज का समारोह इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

आज इस अखिल भारतीय संगीत– समारोह में जो युवा कलाकार भाग ले रहे हैं और जो पुरस्कृत हुए हैं, मैं उन्हें हृदय से बधाई देता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। समय–समय पर इस तरह के कार्यक्रम होते रहने चाहिए। यह

एक बहुत ही सराहनीय कार्य है। इन्हीं युवा कलाकारों में से कल कोई पंडित शिव कुमार शर्मा बनेगा, तो कोई उस्ताद अमजद अली खान, कोई किशोरी अमोनकर, तो कोई उस्ताद बिसमिल्लाह खाँ। युवा कलाकारों को तराशने और सँवारने में ऐसे आयोजनों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इसके लिए मैं पुनः आकाशवाणी–परिवार को बधाई देता हूँ।

बिहार कला–संस्कृति, साहित्य और संगीत की दृष्टि से, अत्यन्त समृद्ध राज्य रहा है। संगीत की दृष्टि से चाहे बात शास्त्रीय संगीत की प्रतिभाओं की हो या लोक गीत–संगीत का प्रक्षेत्र हो –बिहारी कलाकारों ने अपनी प्रतिभा से बिहार का नाम पूरी दुनियाँ में रोशन किया है। बिहार के दरभंगा घराने, पटना घराने और बेतिया घराने आदि का भारतीय संगीत परम्परा में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बिहार की समृद्ध ध्रुपद एवं ठुमरी गायन–परम्परा के अलावे यहाँ की पखावज, सितार, तबला आदि की वाद्य– परम्परा भी अत्यन्त समृद्ध रही है।

मित्रों, आज पाश्चात्य संगीत के कर्कश शोर में भी भारतीय गीत–संगीत को जुगाए रखने की आवश्यकता है। शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत दोनों की अपनी–अपनी खूबसूरती और विशेषताएँ हैं। हमें दोनों ही रूपों को विकसित करना चाहिए। बिहार सरकार का कला–संस्कृति विभाग गीत–संगीत के साप्ताहिक कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से स्थानीय प्रतिभाओं को विकसित करने का प्रशंसनीय प्रयास कर रहा है। मैं आज के इस सफल आयोजन के लिए समस्त आकाशवाणी परिवार को बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।